P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9* December 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

बघेलखण्ड में पर्यटन एवं पर्यटक–योजना

राजबहादुर अनुरागी
सहायक प्राध्यापक,
सामान्य एवं व्यावहारिक भूगोल विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर विश्व विद्यालय,
सागर, म.प्र.

सारांश

New Knowledge and Newness का दूसरा नाम पर्यटन है। आज पर्यटन मानव की मौलिक आवश्यकताओं में शामिल होता जा रहा है। मानवीय मनोरंजन के साधनों का इतना विस्तार होने के बावजूद भी मानव की जिज्ञासाओं को शान्त करने में सक्षम नहीं हो पाया है तथा पर्यटन का अपना अस्तित्व एवं पहचान सर्वोपरि बना हुआ है। क्योंकि यह हमेशा नयापन के साथ सतही जानकारी देता है। जो व्यक्ति की तृष्णा को शान्त करने के साथ ही एक नया अध्याय उसकी जिन्दगी में जोड़ देता है। यही कारण है कि आज शासकीय संस्थायें अपने विद्यार्थियों और कर्मचारियों तथा अर्द्धशासकीय संस्थायें अपने कर्मचारियों को Encourage के साथ ही टूर, ट्रिप, यात्रा, पिकनिक या पर्यटन की व्यवस्था करती है। जिसके उपरान्त लोगों में शारीरिक, मानसिक तथा शैक्षणिक जैसी नवीन ऊर्जा का संचार होता है।

मुख्य शब्द : बघेलखण्ड–पर्यटन, पर्यटक–योजना, एकल एवं समूह–पर्यटन, पर्यटन–विकास।

प्रस्तावना

बघेलखण्ड मध्यप्रदेश का एक राजनीतिक भूभाग है। इसका भौगोलिक विस्तार $22^{o}38'$ से $25^{o}12'$ उत्तरी अक्षांश तथा $80^{o}21'$ से $82^{o}49'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। इसका कुल क्षेत्रफल 38370 वर्ग कि.मी. है। इसमें मध्यप्रदेश के जिले क्रमशः सतना, रीवा, सीधी, शहडोल, उमरिया, सिंगरौली तथा अनूपपुर आते हैं। वर्तमान में 07 जिले, 36 तहसीलें तथा 37 विकासखण्ड इसके अन्तर्गत आते हैं।

विभिन्न ऐतिहासिक पुस्तकों के अध्ययन उपरान्त यह तथ्य सामने आया कि 13वीं शताब्दी में इस धरती पर बघेलों का पर्दापण गुजरात से हुआ। जिन्होंने सर्वप्रथम मड़फा और कालिंजर (उ.प्र.) को अपना आश्रय बनाया। जो पहाड़ी स्थल तथा किले के रूप में सुरक्षित स्थल थे। 16वीं शताब्दी तक आते–आते उन्होंने अपने क्षेत्र का विस्तार कर क्रमशः गहोरा (उ.प्र.), बांधवगढ़ एवं रीवा (म.प्र) को अपनी राजधानियाँ बना ली थी।

विविध अभिलेखों से पता चलता है कि 13वीं शताब्दीं से पूर्व यह भूभाग 'गहोरा', 'डाहल–मण्डल' तथा 'चेदि' जैसे नामों से जाना जाता था। 13वीं शताब्दी से पूर्व यहाँ मुगलों का शासन था। क्योंकि उनके अभिलेखों में बघेलखण्ड शब्द का कहीं उल्लेख नहीं है। 17वीं एवं 18वीं शताब्दी तक आते–आते इस क्षेत्र में पूरी तरह से बघेलों का वर्चस्व हो गया था। ऐसा पेशवा बाजीराव प्रथम (1728) तथा मौनकवि (1853 ई.) द्वारा रचित ग्रन्थों में वर्णित है।

साहित्यावलोकन

बघेलखण्ड क्षेत्र को जानने के लिए अनेक लेखकों, इतिहासकारों एवं भूगोलवेत्ताओं की रचना कृतियों एवं साहित्य सम्पदा का अध्ययन किया गया है। हीरालाल शुक्ल, 'बघेलखण्ड की संस्कृति एवं भाषा' द्वारा रचित पुस्तक में यहाँ की विविध संस्कृतियों एवं भाषाओं की जानकारी प्राप्त होती है। डॉ. विक्रम सिंह बघेल के 'बघेलखण्ड का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास' से इस क्षेत्र में राजनीतिक बर्चस्व का पता चलता है। विभा श्रीवास्तव 'बघेलखण्ड के ऐतिहासिक पर्यटन स्थल' के एक शोध पत्र से यहाँ के कुछ पर्यटन स्थलों के ऐतिहासिक महत्व का उद्धरण मिलता है। डॉ. बी.पी. सिंह 'मध्यप्रदेश में पर्यटन', डॉ. शिवमूरत प्रजापति 'विन्ध्य प्रदेश में वन्य जीव एवं पर्यटन' के माध्यम से बघेलखण्ड के अधिकतम पर्यटन केन्द्रों का विवरण है। 'पर्यटन एवं पर्यटन उत्पाद' डॉ. संजय कुमार शर्मा, डॉ. सुरेश चन्द्र बंसल 'पर्यटन एवं यात्रा प्रबन्धन आधारभूत सिद्धांत', अतुल जोशी, अमित कुमार, महिमा जोशी 'भारत में आधुनिक पर्यटन' आदि में पर्यटन की संकल्पना को स्पष्ट किया गया है। डॉ. राजबहादुर अनुरागी (2006) 'बघेलखण्ड में पारिस्थितिकी पर्यटन' के अन्तर्गत पर्यटक योजना का विस्तृत वर्णन किया गया है। इसके अलावा Krishna K. Kamra and

Mohinder Chand 'Basics of Tourism : Theory, Operation and Parctice' नामक पुस्तक में टूर–पैकेज व पर्यटन–योजना की विस्तृत व्याख्या मिलती है।

शोध का उद्देश्य

1. बघेलखण्ड की ओर पर्यटकों को आकर्षित करना।
2. बघेलखण्ड के कम विकसित पर्यटन स्थलों तक पर्यटकों की पहुँच बनाना।
3. बघेलखण्ड के वैविध्य पर्यटन स्थलों के महत्व को बताना तथा अधिक विकास की संभावनाओं को तलाशना।
4. पर्यटन के माध्यम से राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करना।

शोध प्रविधि

सर्वप्रथम बघेलखण्ड के पर्यटन स्थलों को उनकी उपस्थिति, स्थिति, महत्व, पर्यटक आगमन आदि के आधार पर अध्ययन किया गया है। तत्पश्चात् बघेलखण्ड के पर्यटन स्थलों को एक चार्ट के माध्यम से रेखांकित किया गया हैं। इसके बाद अध्ययन क्षेत्र के समीपवर्ती पर्यटन स्थलों को एक टेबल के माध्यम से पर्यटन आकर्षण को प्रस्तुत किया गया है। पर्यटक योजना के अन्तर्गत पर्यटकों को उनकी सुविधा के अनुसार उसके ठहराव की केन्द्रीय स्थिति को पर्यटन स्थलों के साथ ही रेल एवं सड़क दोनों मार्गों के अन्तर्गत आने वाले पर्यटन केन्द्रों को शामिल किया गया है। छोटे एवं मध्यम महत्व के पर्यटन स्थल को पर्यटकों के दर्शनार्थ हेतु बड़े स्थलों के साथ जोड़ने की योजना का ध्यान रखा गया है।

परिकल्पना

पर्यटन एक विश्वव्यापी संकल्पना है। आज यह विश्व में बड़ी तीव्रता से अपना अस्तित्व स्थापित कर रहा है तथा एक बहुत बड़े समुदाय को आकर्षित कर रहा है। आज यह तीसरे नम्बर का सबसे बड़ा व्यावसायिक संस्थान बन चुका है। यह करोड़ों लोगों का मन हल्का (मनोरंजन) करने के साथ ही साथ रोजगार व स्वरोजगार भी प्रदान करता है। प्राचीनकाल से लेकर अनवरत इसका स्वरूप बदलता रहा है। यह हमेशा से ही मानव की जिज्ञासाओं को शान्त करता रहा है।

बघेलखण्ड इस दृष्टि से एक बहुत उपयुक्त भूभाग है। चूंकि मेरा अध्ययन क्षेत्र बघेलखण्ड रहा है। इसलिए मैंने इसको नजदीक से देखा है। यहाँ के पर्यटन स्थल स्थानीय स्तर से लेकर विश्व स्तरीय समानता वाले है तथा अनेक अनुपम छटा वाले स्थल यहाँ अवस्थित है जो विद्यार्थियों, शोधार्थियों, व्यावसायियों आदि की जिज्ञासाओं को शान्त करने के लिए पर्याप्त है।

किसी स्थान को पर्यटन स्थल क्यों कहा जाय? इस प्रश्न के उत्तर के लिए यह जरूरी है कि उस स्थान की भौगोलिक स्थिति, पारिस्थितिकी, स्थलाकृतियों की विविधता, पर्वत, नदी, घाटियाँ, झील एवं झरने, जलप्रपात, गुफायें, हरी–भरी वादियाँ, प्राचीन स्मारक, किले, गढ़ियाँ, मकबरे तथा सांस्कृतिक विविधता जैसी विशेषताएँ होनी चाहिए, तब ही कोई स्थल पर्यटन स्थल हो सकता है तथा वह पर्यटकों को आकर्षित कर सकता है। देश, काल तथा परिस्थितियों के अनुरूप हमेशा से नये–नये पर्यटन स्थल विकसित होते रहे है तथा मानवीय मस्तिष्क की उलझनों को आसान करते रहे हैं।

भारत विविधताओं का देश है। इस देश का हृदय स्थल मध्यप्रदेश का बघेलखण्ड अपनी प्राकृतिक सुन्दरता तथा ऐतिहासिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक अनेकता के लिए हमेशा से जाना जाता रहा है। यही कारण है कि उसकी खूबसूरती को देखने के लिए लाखों देशी–विदेशी पर्यटक आते है।

बघेलखण्ड में पर्यटन आकर्षण

राष्ट्रीय उद्यान एवं अभ्यारण्य	प्राकृतिक पर्यटन स्थल	ऐतिहासिक पर्यटन स्थल	धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन स्थल (मेले एवं उत्सव)
बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान उमरिया, संजय राष्ट्रीय उद्यान सीधी, सोन घडियाल अभ्यारण्य सीधी, पनपथा अभ्यारण उमारिया, बगदरा अभ्यारण्य सीधी, संजय दुबरी अभ्यारण्य सीधी, अचानकमार बायो रिजर्व क्षेत्र अनूपपुर, सिरसा वन औषधीय केन्द्र चित्रकूट, रामधाम कुण्ड सीधी	चचाई बीहर नदी सिरमौर रीवा, केपटी महाना नदी रीवा, पुरवा टमस नदी रीवा, पियावन टमस नदी रीवा, कपिलधारा नर्मदा नदी अनूपपुर, दुग्धारा नर्मदा नदी अनूपपुर, मुकुन्दपुर चिड़ियाघर, रीवा	सरभंग एवं सुतीक्ष्ण आश्रम, भरहुत, राम वन, रीवा किला, बांधवगढ़ किला, व्यंकट भवन, मांडा की गुफाएँ, मैहर, नगौद किला, गुप्त गोदावरी की गुफाएँ बाघेला म्यूजियम, रीवा पथर की गुफाएँ एवं पंचमठ गुफा–शहडोल, गढ़ी–फोर्ट–अमरपाटन, माधवगढ़ किला, रॉक शेलटर पेंटिंग, रॉक शेल्टर गोरा पहाड़ सिंगरौली	रामघाट चित्रकूट, बिरसिंहपुर शिवमंदिर, मैहर शारदा माता मंदिर, देवतालाब, चिरहुला हनुमान मंदिर, विराटेश्वर अमरकंटक, शगरा (प्राचीन शिव मंदिर) एवं विश्वनाथ मंदिर मण्डी बाग, उमरिया, भैरो बाबा (क्षैतिज) गुढ़, चित्रकूट रामायण मेला, उस्ताद अलाउदीन खां संगीत समारोह मैहर, गनेश गुफा, शंकर गुफा, हनुमान गुफा माडा सिंगरौली

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण एवं जनसंपर्क द्वारा।

पर्यटक को किसी परिधि में नहीं बांधा जा सकता है। उद्देश्य, आवश्यकता, शौक, मनोरंजन आदि के लिए वह सीमाओं से परे अपनी यात्राओं को जन्म देता है। पर्यटक योजना के अन्तर्गत वह बघेलखण्ड के समीपवर्ती पर्यटन स्थलों को भी शामिल कर सकता है। अध्ययन क्षेत्र की परिधि से बाहर विविध प्रकृति वाले पर्यटन स्थल पाये

जाते है। जो पर्यटकों की अनेक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सक्षम है।

बघेलखण्ड के समीपवर्ती पर्यटन स्थलों का योजना स्वरूप

क्र.	पर्यटन स्थल का नाम	स्थिति	दूरी / कि.मी.	मुख्य आकर्षण	सुविधायें
1.	पन्ना राष्ट्रीय उद्यान	पन्ना	सतना–60 रीवा–110	रेप्टाइल वन्य जीव	सड़क मार्ग आवास सफारी
2.	भेड़ाघाट	जबलपुर	रीवा–200	सफेद संगमरमर चट्टाने, नौकायन सुविधा, आकर्षक नदी घाटी दृश्य	सड़क, रेल, वायु, आवास– उच्च स्तरीय
3.	कालिंजर	बांदा (उ.प्र.)	सतना–35	ऐतिहासिक किला (पहाड़ के ऊपर) प्राकृतिक कुण्ड, ट्रेकिंग, माउंण्टेनिंग	सड़क मार्ग, आवास
4.	खजुराहो	छतरपुर	सतना–110 रीवा–160	विश्व विरासत स्थल एवं मंदिर (कला–कौशल का अदभुत संगम)	सड़क, रेल, दैनिक वायु सेवा, उच्च स्तरीय होटल
5.	ओरछा	टीकमगढ़	रीवा–270 सतना–220	हरदौल की गाथायें, प्रसिद्ध राम राजा मंदिर, ऐतिहासिक किला	सड़क रेल, आवास
6.	कान्हा किसली राष्ट्रीय उद्यान	मण्डला	सतना–250	वन्य जीव जन्तु एलीफेंट सफारी	सड़क, रेल, आवास
7.	इलाहाबाद	उ.प्र	रीवा–125	नदी संगम, गंगा स्थान, धार्मिक स्थल शैक्षणिक केन्द्र	सड़क, रेल, वायु, आवास
8.	वाराणसी	उ.प्र.	रीवा–225	गंगा आरती प्रसिद्ध विश्वनाथ मंदिर शैक्षणिक गतिविधि	सड़क, रेल, वायु, आवास

पर्यटक–योजना

किसी भी स्थल की यात्रा करने से पहले पर्यटक एक योजना बनाता है। इस योजना में वह अधिक से अधिक स्थलों को कम से कम समय में देखना करता शामिल करता है। आज हमारे पास कम्प्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल जैसी आधुनिक सुविधायें तो हैं परन्तु इनसे हम उस क्षेत्र के बड़े एवं प्रसिद्ध स्थलों की ही जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। कई छोटे किन्तु महत्वपूर्ण स्थल जानकारी के अभाव में वंचित रह जाते हैं। इसलिए छोटे पर्यटन स्थलों को भी प्लान में शामिल करना एवं उनको बड़े पर्यटन स्थलों की समानता में लाना इस पर्यटक योजना में शामिल है।

पर्यटक–योजना के प्रकार

इसके अन्तर्गत दो प्रकार की योजना शामिल हैं–

1. एकल पर्यटक योजना,
2. समूहगत–पर्यटक योजना

एकल पर्यटन योजना

इस योजना में कोई एक व्यक्ति (स्त्री/पुरुष), विद्यार्थी, शोधकर्ता, उद्यमी आदि शामिल होता है। सामान्यतया यह खर्चीला, ऊबाऊ, थकाऊ होती है। इसमें सारी सुविधायें स्वयं पर्यटक को उठानी पड़ती है।

समूहगत पर्यटक योजना

इसमें एक फैमिली, स्कूल/कॉलेज ग्रुप किसी संस्थान का कर्मचारी ग्रुप या कई परिवारों का सामूहिक ग्रुप शामिल होता है। इसके अन्तर्गत आने वाले पर्यटकों की यात्रा काफी आकर्षक, मनोरंजक, ज्ञानवर्धक तथा विशेष अनुभवों वाली होती है। यह दोनों तरह से सम्पन्न की जा सकती है। स्वयं पर्यटकों द्वारा तथा टूर ऑपरेटर अथवा ट्रवल एजेंट द्वारा मध्यप्रदेश सरकार द्वारा 'तीर्थ दर्शन योजना' इसका उदाहरण है।

बघेलखण्ड में एकल एवं समूहगत पर्यटक योजना का स्वरूप

क्र.	पर्यटन स्थलों का नाम	अवधि	ठहरने का मुख्यालय
1.	चित्रकूट रीवा, गोविन्दगढ़, चचाई एवं बहुती जल प्रपात, रीवा किला, बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान, पनपथा अभ्यारण्य, बगदरा अभ्यारण्य, संजय राष्ट्रीय उद्यान, संजय दुबरी अभ्यारण्य, सोन घड़ियाल अभ्यारण्य, चित्रकूट।	5–7 दिवस	चित्रकूट रीवा, बांधवगढ़, सीधी एवं उमरिया मुख्यालय
2.	रीवा– रीवा किला, गोविन्दगढ़ तालाब, जलप्रपात, बांधवगढ़, अमरकंटक, रीवा	3–4 दिवस	रीवा, अमरकंटक
3.	रीवा (उपान्त दृश्य) संजय राष्ट्रीय उद्यान सीधी, मांडा गुफाएँ, सिंगरौली, कोयला खदानें, रिहन्द बांध।	4 दिवस	रीवा, सीधी, सिंगरौली जिला मुख्यालय
4.	सतना भरहुत राम वन, बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान, कान्हा–किसली, भेड़ाघाट, धुंवाधार जल प्रपात, मैहर सतना।	5 दिवस	सतना कान्हा–किसली जबलपुर
5.	सिंगरौली– कोल खदान, बनारस, इलाहाबाद (संगम) रीवा–	7 दिवस	सिंगरौली, वाराणसी, इलाहाबाद

	सीधी–सोन घड़ियाल अभ्यारण्य, संजय राष्ट्रीय उद्यान, मांडा गुफाएँ सिंगरौली।		
6.	सतना–पन्ना (एन.एम.डी.सी.) हीरा खदान, प्रसिद्ध मंदिर– जुगलकिशोर एवं प्राणनाथ, पन्ना राष्ट्रीय उद्यान, केन घड़ियाल–छतरपुर–खजुराहो सतना।	2–3 दिवस	सतना, पन्ना, खजुराहो

बघेलखण्ड की रेल–पर्यटक योजना का स्वरूप

1. इलाहाबाद – सतना– रीवा– मैहर– कटनी– जबलपुर।
2. कटनी– शहडोल– उमरिया– अनूपपुर–बिलासपुर।
3. चित्रकूट– महोबा– खजुराहो– छतरपुर– ललितपुर– झांसी– ग्वालियर।
4. रीवा– सतना– मझगंवा– मानिकपुर– चित्रकूट।

बघेलखण्ड में सड़क मार्ग एवं उसकी पर्यटक–योजना

क्र.	सड़क मार्ग	पर्यटन स्थल
1.	चित्रकूट–सतना– मैहर– उमरिया–अनूपपुर	रामघाट, चित्रकूट, गुप्त गोदावरी, सीमेंट फैक्ट्री सतना, भरहुत, मैहर–मंदिर, गोलमठ, बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान, प्राचीन शिव मंदिर सगरा, अमरकंटक–नर्मदा–सोन उद्गम, जलप्रपात कपिलधारा एवं दुग्धारा।
2.	रीवा–गोविन्दगढ़– ब्योहारी–शहडोल	रीवा किला व्यंकट भवन, बाघेला म्यूजियम, चचाई जलप्रपात, बिछिया–बीहर नदी संगम, गोविन्दगढ़ तालाब, छुहिया–घाटी, बाणसागर बांध, पनपथा अभ्यारण्य, सिंगपुर गुफाएँ, पत्थर की गुफाएँ।
3.	रीवा–सीधी– सिंगरौली	देअर–कोठार (बौद्ध स्तूप), मुकुन्दपुर जू, सोन घड़ियाल अभ्यारण्य, भॅवरसेन, संजय राष्ट्रीय उद्यान, बगदरा अभ्यारण्य, जलप्रपात, रामधाम कुण्ड, रॉक शेल्टर, गोरा पहाड, रॉक शेल्टर पेंटिग, गुफा–विवाह, गनेश गुफा, शंकर गुफा, हनुमान गुफा, मांडा की गुफाएँ।
4.	नागौद–सतना– रामवन रीवा– सोहागी–त्योथर	नागौद का किला, गढ़ी–किला अमरपाटन– कुंवरमठ जसो, माधवगढ़ किला, रामवन ऐतिहासिक संग्रहालय, सोहागी घाटी।

किसी भी पर्यटन स्थल की लोकप्रियता इस बात पर निर्भर करती है कि वह कितना पर्यटकों को आकर्षित करने की क्षमता रखता है तथा मानवीय जिज्ञासाओं को शान्त करता है। निम्न तत्व किसी भी पर्यटन स्थल की प्रसिद्धि हेतु आवश्यक है–

1. आकर्षण की विविधता
2. अधोसंरचना तंत्र का विकास।

बघेलखण्ड में पाये जाने वाले 70 प्रतिशत पर्यटन स्थल प्राकृतिक या पारिस्थितिकीय पर्यटन है। अतः यह कहा जा सकता है कि यहाँ अभी भी प्रकृति एवं प्राकृतिक अक्षुण्यता जीवन्त है। कई पर्यटन स्थलों में प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक तत्वों का संगम पर्यटन केन्द्रों में आकर्षण को और अधिक बढ़ा दिया है जैसे– चित्रकूट, मैहर, अमरकंटक आदि।

निःसंदेह बघेलखण्ड में सभी प्रकार के पर्यटन स्थल पाये जाते है तथा पर्यटन प्रसार की अपार संभावनाऐं विद्यमान है। लेकिन पर्यटक–योजना का अभाव, प्रचार–प्रसार की कमी, पर्यटन के नवीन आयामों का कम विकास आदि के कारण कुछ पर्यटन स्थलों को छोड़कर शेष स्थल पर्यटन–विकास की मुख्य धारा से वंचित होते जा रहे हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि पर्यटक–योजना को बनाते समय छोटे–छोटे पर्यटन स्थलों को भी शामिल किया जाए जिससे अध्ययन क्षेत्र का समुचित विकास हो सके।

निष्कर्ष

पर्यटक–योजना एक व्यवस्थित व्यवस्था का नाम है। लेकिन यह इतनी सरल नहीं है। इस व्यवस्था में उत्पाद; पर्यटक लागत, स्थिति, व्यवस्थापन, नवीन तकनीक का उपयोग, बाजार तथा पर्यटकों की अपेक्षाओं आदि की एक साथ व्यवस्था बनाना शामिल होता है। इसके साथ ही इन व्यवस्थाओं की योजना का सामाजिक विस्तार कर जागरूकता का प्रसार करना इसका एक अहम पहलू है। यह कहना जरूरी होगा कि जहाँ बघेलखण्ड के विकसित पर्यटन स्थल जैसे– चित्रकूट, बांधवगढ़, राष्ट्रीय उद्यान, अमरकंटक, मैहर आदि में पर्यटकों का वर्ष भर आना–जाना बना रहता है, वही इनकी परिधि के अन्तर्गत आने वाले पर्यटन केन्द्रों पर पर्यटकों की उपस्थिति नगण्य रहती है। इसके पीछे मूलभूत सुविधाओं की कमी व सुगम पहुँच की प्रतिकूलता हो सकती है। इसके अलावा पर्यटक–योजना से जुड़ी संस्थाओं की कमी है जो एक पर्यटक योजना बनाकर पर्यटकों के सामने प्रस्तुत कर सके।

सुझाव

शोध का विषय क्षेत्र बहुत ही सुसंमृद्ध है। इस क्षेत्र में वन एवं वन्य जीवों सहित प्राकृतिक तत्वों की बहुलता है। साथ ही प्राकृतिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अवयवों की मौजूदगी इस क्षेत्र को पर्यटन विकास का एक आदर्श मॉडल बना सकती है। जरूरत इस बात की है कि इनको एक प्लान के तहत विकसित कर पर्यटकों के लिए उपलब्ध कराना। आधारभूत बुनियादी सुविधाओं से इन स्थलों को जोड़ना, एक क्रमागत विकास हेतु शासकीय एवं निजी प्रयास की आवश्यकता है। एक–एक पर्यटन केन्द्र को सांसद, विधायकों, निजी संस्थाओं या पर्यटन प्रेमियों द्वारा गोद लेकर भी इनको विकसित किया जा सकता है।

इसके अलावा नवीन राष्ट्रीय उद्यान, अभ्यारण्य स्थापित करना, अभ्यारण्यों को राष्ट्रीय पार्क में बदलना, नवीन इको–पार्क, इको–पर्यटन विकसित करना, इको–स्पोर्ट, एडवेंचर–स्पोर्ट, वाटर–स्पोर्ट, एयर–स्पोर्ट जैसी नवीन क्रीड़ायें विकसित कर पर्यटन विस्तार संभावित है। 'पहले यात्रा करो, फिर भुगतान करो', टी–प्लान, पर्यटन विकास प्रोत्साहन, नवीन ट्रवल ऐजेंट व ऐजेसिंयों को विकसित कर बघेलखण्ड को एक आदर्श पर्यटन केन्द्र बनाया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *खत्री, हरीश कुमार, पर्यटन भूगोल, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल।*
2. *शुक्ल, हीरालाल, बघेलखण्ड की संस्कृति एवं भाषा।*
3. *मिश्र, जी.पी., 'बघेलखण्ड के आधारभूत सुविधाओं के विकास के लिए योजना, पी–एच.डी., अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)*
4. *आम्रवंशी, चित्रा, 'बघेलखण्ड का सामाजिक आर्थिक विकास', अप्रकाशित शोध प्रबंध, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)*
5. *श्रीवास्तव, लोकेश, (2010) मध्यप्रदेश का भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।*
6. *अनुरागी, आर.बी., बघेलखण्ड में पारिस्थितिकी पर्यटन, अप्रकाशित शोध प्रबंध, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)*
7. *Kamra, Krishna K. and Chand, Mohinder, 'Basics of Tourism-Theory, Operations and Pructice, Kahishka Publishers, Distributors, New Delhi.*